ANNUAL EVALUATION 2020

HINDI ANSWER KEY PREPARED BY: PANKAJAKSHAN C N , RGMHSS MOKERI

1	जवाब |
2	क्योंकि पक्षी मूर्ख था |
3	**दृश्य** [जंगल का रास्ता |तीसरा पहर | गाडीवाला जो लगभग 50 साल का आदमी| धोती और बनियन पहना हुआ था| सिर् पर पगडी बाँधी थी | पक्षी जो घास के गुच्छे में सिमटकर बैठा था | बैल गाडी सडक पर आ रही है |] पक्षी : " गाडीवाले , ओ गाडीवाले ! मै कब से तुम्हारा इंतज़ार कर रहा ता |" गाडीवाला :(चारो ओर देखता है) पक्षी : "देखो मैं कितनी सारे दीमकें जमा कर ली हैं |". गाडीवाला : "तो मै क्या करूँ|" पक्षी : "ये मीरी दीमकें ले लो ओर मेरे पंख मुझे वापस कर दो |" गाडीवाला : "बेवकूफं , मैं दीमक के बदले पंख लेता हूँ |, पंख के बदले दीमक नहीं |" [गाडीवाला चला जाता है | पक्षी छटपटाकर रह जाता है |
4	वह+ के उसके
5	कोल तार की सडक तपने लगी | पोस्टमैन नंगे पैर चलता था| बेबी : "अजी तुमने होली का उपहार नहीं माँगा |" पोस्टमैन : "माँगूँगा बहिन जी |" बेबी : कब ? पोस्टमैन : "साहब से भेंट नहीं हो रही है "| बेबी : " ले अब मेरे ये उपहार |" पोस्टमैन : "यह क्या है बेबी?" बेबी :"खोलकर देखो|"
7	सारा
8	अकाल में सारस पक्षी - झुंड में आए | सारे आसमान में - सारस पक्षी धीरे धीरे छा गए | सारस पक्षी के क्रेंकार से - सारा का सारा शहर भर गया | सारस पक्षी शहर की परिक्रमा - देर तक करते रहे |
9	शायरों के प्रति ब्राउन का आदर यहां प्रकट होता है | लेकिन कैद किए अन्य बेशुमार बेगुनाहों के प्रति उनकी कार्यवाही से सहमती नहीं कर सकता हूँ |

10	**कवि है तो गिरफ़्तार नहीं** दिल्ली : अंग्रेजों ने दिल्ली में आते ही सीधे साधे लोगों को मारा और गरीबों के घर जला दिए.| इसके सिलसिले में कर्नल ब्राउन नामक अंग्रेजीं अफ़सर के नेतृत्व में विख्यात गज़ल कवि मिर्ज़ा असद उल्ला बैग खान के घर में भा कुछ अंग्रेज़ सिपाही आए | उनके बच्चों , 3 नोकरों और कुछ पडोसियों को गिरफ़्तार कर लिया था | लेकिन शायर होने के कारण मिर्ज़ा गालिब को और साथ गिरफ्तार किए लोगों को रिहा कर दिया गया | बडे इज्ज़त के साथ उन्हे घर पहुंचा दिए | अथवा 5 अक्तूबर 1857 आज की घटना अविस्मरणीय है | मैं ने कभी नहीं सोचा था कि जान से बच जाऊँगा | कर्नल ब्राउन के कवि होने के कारण गिरफ़्तार किए मुझे और साथियों को कितने इज्ज़त के सात रिहा कर दिया है | मेरे जवाब से वे कितने खुश हुए | मेरे निवेदन से सब बच गए | ईश्वर की कृपा से ऐसा जवाब देने का विचार आया नहीं तो कल्पना भी नहीं कर सकता |
11	स्नेह रूपी अनमोल संपत्ती से संसार को धन्य बना पाया | स्वार्थता के बंधनो से मुक्ति मिल गई |
12.	हिंदी साहित्य की प्रगतिशील कवि त्रिलोचन शास्त्री की सुंदर कविता है - "दीप जलाओ" | इस कविता में कवि हमें कह देते कि जीवन में मानवीय मूल्यों को अपनाकर सामाजिक भलाई के कार्यक्रमों में भागीदार बनें | . कवि कहते हैं कि हमें मन के बंधनों को मुक्त करना है | हमे प्रकाश का और विजय का वंदन करना चाहिए | स्ययं ही स्नेह गीत बनाकर संसार मे लहराएँ और संसार को धन्य बनाएँ | द्वेष ,दम्भ, अन्याय , घृणा, छल आदी से भरी हुई वर्तमान दुनिया में इस कविता की बडी प्रासंगिकता है |
13	लडकियाँ किताब पढ़ती हैं |
14	धार्मिक|
15	• माँ प्यार करती थी | • माँ लोगों से प्यार करती थी | • मेरी माँ लोगों से प्यार करती थी | • मेरे लोगों से बहुत प्यार करती थी |
16	अब तुम खाओ |
17	दुनिया का पुराना हाल जान सकते हैं प्रकृती का हर चीज़ों आत्मकथा समझ सकते हैं |
18	**प्रकृति ओर मनुष्य का आपसी संबंध** मिट्टी , जल ओर वायु इन सबको मिलकर प्रकृति कहते है | लाखों करोडों वर्ष पुरानी इस प्रकृति का सही हाल इतिहासों से हम समझ सकते हैं | बेहद गर्मी होने के कारण धरती में कोई जानदार चीज़ नहीं थी | बाद मे जानवर , मनुष्य आदि सब कुछ यहां जन्म लेने लगे |

	प्रकृति जीवन का आधार है	धरती सभी जीव जालों का बसेरा बन गया	स्वच्छ वायु और जल सब के वरदान थे	आज इस दुनिया में जो प्रगति हुई है इन सब में पकृति का सराहनीय स्थान हैं	यह ज्ञान श्रोत भी हैं	गांधीजी ने बताया है प्रकृति में हमारे लिए सब कुछ है	लेकिन स्वार्थ पूर्ति के लिए कुछ नहीं है	बारीखी से देखने पर हम समझ सकते है कि प्रकृति हमारा ज्ञानश्रोत है	कई पेड़, पौधे और कीडा जडी आदि अच्छी औषधिया हैं | लेकिन आज मानव के अनियन्त्रित हस्तक्षेप से प्रकृति का नाश हो रहा है	इसका बुरा असर सिर्फ़ मनुष्य पर ही नहीं सारे जीव जालों पर पडता है	हम मिट्ठी , जल , वायु सबको प्रदूषित कर रहे हैं |इस लिए प्रकृति का संतुलन बिगड रहा है	जीव जालों का सरव नाश हो रहा है | हमें यह जानना चाहिए कि आने वाली पीढी भी प्रकृति का हकदार हैं	उन्हे जीने के लिए स्वच्छ प्रकृति को सौंप देने का दाईत्व हमे निभाना है	आगे के दिनों में हम उसमे लीन हो जाए | अथवा • प्रकृति हमारी माँ है इसकी सुरक्षा हमारी जिम्मेदारी हैं • बिना प्रकृति के हम जी नहीं सकते • आओ. .....मिले प्रकृति की रक्षा करे